## B.A. Part-III (Hons) Paper-VI

## Sarvodaya

**Q- Explain the chief features of Sarvodaya as a Political Ideology.**

सर्वोदय का अर्थ होता है सबका उदय या सबका विकास। यह एक प्राचीन विचारधारा है। प्राचीन विचारकों ने तो यहाँ तक कहा था "सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।" फिर एक जगह कहा गया है: "सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग्भवेत्।" इससे पता चलता है कि प्राचीन भारतीय विचारक भी सर्वकल्याण की भावना रखते थे। इस प्रकार की घोषणा जैन विचारकों ने भी की थी। आधुनिक युग में सर्वोदय को महात्मा गाँधी ने नए ढंग से एवं सशक्त रूप से प्रतिपादित किया है। उन्होंने रस्किन की पुस्तक "अन्टू दि लास्ट" का अनुवाद किया और इसका नाम 'सर्वोदय' दिया। गाँधीजी के बाद उनके अनुयायी एवं सहकर्मी संत विनोबा ने इस आदर्श को मूर्त रूप प्रदान किया।

गाँधी का सर्वोदय हीगेल के उस मत का भी खंडन करता है जिसमें कहा गया है 'जीने के लिए मरो' (Die to live)। इस उक्ति में अपने जीने के लिए अपनी आहुति की बात कही जाती है। 'सर्वोदय' इसके विपरीत दूसरों को जिलाने के लिए अपनी आहुति चढ़ाने का आदर्श (Die to others) प्रस्तुत करता है।

सर्वोदय का 'सर्व' संख्यात्मक होने के साथ-साथ गुणात्मक भी है। सबों के सर्वांगीण विकास पर यहाँ जोर दिया जाता है। आत्मपूर्णता ही सर्वांगीण विकास है। व्यक्ति की समस्त क्षमताओं का पूर्ण विकास ही सर्वोदय है। गाँधी के अनुसार सर्वोदय का प्रमुख लक्ष्य वर्गविहीन, शोषणविहीन एवं राज्यविहीन समाज की स्थापना है। संत विनोबा के शब्दों में, "सबै भूमि गोपाल की" निश्चय ही सबों को समान सुविधा दिलाने का आश्वासन देता है। प्रकृति या ईश्वर ने सबों को हवा, पानी, प्रकाश आदि की समान सुविधा प्रदान की है। अतः सबों को विकास का समान अवसर मिलना चाहिए। इसके लिए विनोबा ने हृदय-परिवर्तन को महत्वपूर्ण बताया।

मार्क्स ने भी वर्गविहीन, शोषणविहीन एवं राज्यविहीन समाज की कल्पना की थी। परन्तु, गाँधी के 'सर्वोदय' तथा 'मार्क्सवाद' में स्पष्ट अंतर है। मार्क्सवाद केवल साध्य (End) पर ध्यान देता है और साधन (Means) की पूर्ण अवहेलना कर देता है। महान साध्य या लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कोई भी साधन (अच्छा या बुरा) अपनाया जा सकता है। यही कारण है कि मार्क्सवाद में हिंसा का मार्ग अपनाना कोई अनुचित नहीं बताया गया है। 'सर्वोदय' इससे भिन्न है। यहाँ साध्य के साथ-साथ साधन की पवित्रता पर भी ध्यान दिया गया है। महान साध्य की प्राप्ति के लिए हिंसा या कोई अन्य बुरा साधन अपनाना सर्वथा अनुचित है। इसीलिए गाँधी एवं विनोबा ने सर्वोदय में सत्य, अहिंसा, प्रेम, हृदय-परिवर्तन आदि को सर्वाधिक महत्व दिया गया है। उच्च लक्ष्य की प्राप्ति के लिए निम्नस्तर के साधन अपनाने की स्पष्ट मनाही की गयी है। साधन की अपवित्रता साध्य को भी अपवित्र बना सकती है। अतः, सर्वोदय और मार्क्सवाद में महत्वपूर्ण अंतर है।

Scanned with CamScanner

सर्वोदय का लक्ष्य अनेक प्रकार से निर्धारित किया गया है। इसमें प्रमुख निम्नलिखित है —

सर्वोदय का लक्ष्य वर्गविहीन, शासन विहीन तथा राज्य विहीन समाज की स्थापना करना है। इन लक्ष्यों की प्राप्ति निम्नलिखित अवसरों से हो सकती है —

(i) सर्वोदय के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति समान रूप से स्वतंत्र होगा। राज्य तथा अन्य संस्थाओं द्वारा सत्ता का प्रयोग समाप्त करना होगा। सर्वोदय व्यवस्था एक ऐसी व्यवस्था होगी जिसमें समाज के उत्कर्ष के लिए बल प्रयोग की आवश्यकता नहीं होगी।

(ii) सर्वोदय समाज में हर प्रकार के स्वामित्व का विकेन्द्रीकरण होगा।

(iii) सर्वोदय समाज में समान अधिकार होंगे और नागरिक पालन के लिए समान अवसर प्रदान किया जाएगा।

(iv) सर्वोदय समाज में व्यक्तित्व के विकास के लिए साधन प्रदान किए जायेंगे। प्रत्येक मनुष्य की अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति की जाएगी।

(v) व्यक्ति को दोषों से बचाने के लिए उसे आत्म-संयम की शिक्षा दी जायेगी। सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, अस्तेय, अस्वाद, शारीरिक श्रम, निर्भीकता, स्वदेशी, सर्वधर्म, समानत्व आदि के पालन का विधान किया जाएगा।

(vi) आर्थिक स्वावलम्बन के लिए ऐसी व्यवस्था की जाएगी कि समाज स्वावलम्बी होगा। प्रत्येक क्षेत्र अपनी आवश्यकताओं का स्वयं उत्पादन करेगा।

(vii) आर्थिक व्यवस्था ऐसी होगी कि व्यक्ति अपनी जरूरतों की पूर्ति का शेष धन समाज कल्याण के लिए खर्च कर देगा। वह अतिरिक्त धन का सिर्फ संरक्षक होगा, स्वामी नहीं होगा।

(viii) सर्वोदय में उत्पादन के साधन ऐसे होंगे जिनमें व्यक्ति और प्रकृति किसी का शोषण नहीं होगा। और सुसंस्कृत समाज होगा।

(ix) सर्वोदय समाज एक धर्म और ... के साथ-साथ इसमें बहुसंख्यक तथा अल्पसंख्यक का भेद नहीं होगा। सभी आपस में एक धर्म और दूसरे धर्म में भेद नहीं ... प्रेमभाव एवं भाई-चारा के साथ रहेंगे।

गाँधी का सर्वोदय-विचार भारतीय दर्शन में मूलतः मौलिक नहीं कहा जा सकता। अद्वैत वेदांत ने जो मौलिक समता का उपदेश दिया था उसे गाँधी ने जीवन के हर क्षेत्र में क्रियान्वित किया। उन्होंने अद्वैतवाद को सैद्धांतिक स्तर से हटाकर व्यावहारिक जीवन में प्रयुक्त किया। इस संप्रत्यय का समाजीकरण करना उनकी अपनी विशेषता है। उनके पूर्व अपने भारतीय विचारकों ने 'सर्वहित' का संदेश दिया था। गाँधी के सर्वोदय की एक प्रमुख विशेषता यह है कि यहाँ अहिंसा, सत्य, प्रेम पर विशेष बल दिया गया है। प्रेम द्वारा हृदय-परिवर्तन का संदेश संत विनोबा ने अपने ढंग से प्रसारित किया। इसके कई अच्छे परिणाम भी दीख पड़े।

दिनांक 20/7/20

([illegible] शर्मा)
एसोसिएट [illegible], [illegible]